टी.वी. इस ज़माने का सब से बडा फितना

हज़रत मुफ्ती अहमद खानपुरी दब.

महमुदुल मवाइज़ उर्दु से रिवायत का खुलासा लिप्यान्तर किया गया है.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

पेहले ज़माने मे तो ये होता था के टी.वी. नही थी तो सिनेमा हाउस जाते थे और हर एक उसकी जुरअत नही करता था जो अच्छे सफेद पोश होते थे उनके लिये सिनेमा मे जाना मुश्कील होता था अब तो एक कोने मे बेठ कर दाढी भी है हाथ मे तस्बीह भी है और देख रहे है शायर केहता है - बहुत मुश्कील है बचना मऍ गलगलों से खलवत मे बहुत आसान है यारों मे मआज़ल्लाह केह देना दोस्तो की मेहफिल मे नउज़ुबिल्लाह नउज़ुबिल्लाह बोल देना तो आसान है लेकिन तन्हाइ मे उस गुनाह से अपने आपको बचाना बडा मुश्कील है.

टी.वी. ने आकर तकवे का परदा फाश कर दिया: तो हकीकत तो ये है के टी.वी. ने आकर के आज सब की परहेज़गारी और तकवे का परदाफाश कर के रख दिया है

आज शायद ही कोई ऐसा आदमी हो जिसके घर मे टी.वी. ना हो और वो उससे बचता हो टी.वी. की एक खासीय्यत ये भी है के आदमी जब कोई गुनाह बार बार करता है तो उस गुनाह की कबाहत उसकी इशात उसकी बुराई उनके दिल और दिमाग से निकल जाती है जिन लोगो के घरों मे टी.वी. है वो किया केहते है? उसमे किया हो गया? किया हर्ज़ है? मतलब ये के उसमे कोई हर्ज़ नही.

टी.वी. मे किया हर्ज़ है केहने वाले इमान की खैर मनाये: देखीये दो चीझे अलग अलग है एक तो है गुनाह का करना एक आदमी गुनाह कर इरतेकाब करता है और समझता है के मे गुनाह कर रहा हु तो ठीक है अल्लाह उसको तौबा की तौफीक भी दे दे लेकिन एक आदमी गुनाह का काम ये समझ कर के करता है के ये गुनाह नही है हलाल समझ करता है तो किसी हराम काम को हलाल समझ कर करना उससे आदमी इमान से निकल जाता है आज टी.वी. मे किया हर्ज़ है केहने वाले अपने इमान की खैर मनाये.

टी.वी. मे जो चीझे होती है किया होता है एक तो गाना और गाने की हुरमत कुरान और हदीस से साबित है जैसा के मेने भी आप के सामने पेश किया और फिर उसमे गाने बजाने के साधन इस्तेमाल किये जाते है रसूलुल्लाहﷺ तो फरमाते है मुजे अल्लाह ने गाने बजाने के साधन को तोडने के लिये भेजा है मेरा भेजना ही इस्के लिये हूवा है और उम्मती को बगैर उसको सुने हुवे सुकून और चैन न पडे ये हाल मोहब्बत का दावा करने जैसा है?

टी.वी. बेशुमार गुनाहो का मजमुआ है: और फिर ये के उसमे औरतो की मिलावत होती है उसपर जो औरते दिखलाइ जाती है उनकी तरफ मरद शौहवत की निगाह से देखता है हालाके कुरान मे निगाह की हिफाज़त फर्ज़ करार दी गई है हदीस मे है उसके बारे मे बडी ताकीद आयी है उसमे औरते भी मरदो को देखती है उस टी.वी. पर मरदो और औरतो का इख्तीलात दिखाया जाता है ये वो गुनाह है जिन का नाजाइज़ और हराम होना कुरान और हदीस के उसूल से

साफ साफ साबित है.

इस्के बाद एक आदमी अपनी जुबान से ये केहता है इसमे किया हर्ज़ है आप खूद अन्दाज़ा लगाये के ऐसा जुम्ला बोल करके उसका इमान कैसे महफूज़ रेह सकता है ये टी.वी. जो है उसने तो हमारी नसलो को खराब कर दिया है एक जर्मन के माहिर का केहना है के ये टी.वी. तुम्हारे मुआशरे को खतम करे तबाह करे तुम्हारी आने वाली नसलो को बरबाद करे उससे पेहले उसको उठा कर निकाल दो.

अल्लाह हम को सही समझ अता फरमाये और ऐसे गुनाहो से बचने की बार बार तौफीक अता फरमाये.